Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP- 25*

शहरीकरण का जैव विविधता पर प्रभाव

डॉ.किरण मंडलोई, *सहायकप्राध्यापक,भूगोल, शासकीयस्नातकोत्तरमहाविद्यालय, बड़नगर*

साराश-

वर्तमानसमयमेंशहरीकरणमानवसमाजकेविकासकीएकमहत्वपूणतप्रक्रियाबनचुकाहै।जनसंख्यावृद्धि, औद्योगीकरण, आर्थिक विकास, रोजगार, शिक्षा, परिवहन, स्वास्थ्य तथा अन्य सुविधाओं की उपलब्धता के कारण शहरों का विस्तार तीव्र गति से हो रहा है। शहरीकरण के परिणामस्वरूप प्राकृतिक आवासों, वनस्पतियों, जीवमि उपयोग में व्यापक जंतुओं तथा भू-परिवर्तन हो रहेहै।यद्यपि शहरीकरण आर्थिक विकास एवं आधुनिक जीवनशैली को गति-प्रदान करताहै।, तथापि इसके कारण पर्यावरण एवं जैव विविधता के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं।

नगरों एवं महानगरों के निरंतर विस्तार के कारण प्राकृतिक आवासों का विनाश हो रहा है, जिससे जैव विविधता में कमी आ रही है तथा पारिस्थितिक संतुलन प्रभावित हो रहा है। पृथ्वी पर पाई जाने वाली अनेक वनस्पति एवं जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ अस्तित्व के संकट का सामना कर रही हैं। अतः शहरीकरण और जैव विविधता के मध्य संबंधों का अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक हो गया है।

मुख्य शब्द (*Keywords*): शहरीकरण, पर्यावरण, औद्योगीकरण, पारिस्थितिकी, जैव विविधता

प्रस्तावना-

प्राचीन काल में नगरों का विकास स्थानीय संसाधनों, पर्यावरणीय संतुलन तथा भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया जाता था। प्रारंभिक नगर मुख्यतः नदियों के किनारे, उपजाऊ भूमि एवं व्यापारिक मार्गों पर विकसित हुए। मानव सभ्यता के विकास के साथसाथ शहरीकरण की प्रक्रिया निरंतर-बढ़ती गई। प्राचीन समय में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती थी, किंतु औद्योगिक क्रांति एवं जनसंख्या वृद्धि के पश्चात शहरों का तीव्र विस्तार होने लगा।

वर्तमान में विश्व की आधे से अधिक जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। शहरी क्षेत्रों के विस्तार हेतु प्राकृतिक वनों, कृषि भूमि तथा अन्य प्राकृतिक क्षेत्रों को आवासीय, औद्योगिक एवं व्यावसायिक उपयोग में परिवर्तित किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक आवासों का विनाश, प्रदूषण, संसाधनों पर दबाव तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जो जैव विविधता एवं मानव जीवन दोनों के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी हैं।

जैव विविधता पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी जीवजंतुओं-, वनस्पतियों, सूक्ष्मजीवों तथा पारिस्थितिक तंत्रों की विविधता को दर्शाती है। यह पारिस्थितिक तंत्रों की स्थिरता, उत्पादकता एवं संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत जैसे विकासशील देशों में तीव्र शहरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है, जिससे जैव विविधता संरक्षण एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गया है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

इसलिए शहरीकरण और पर्यावरणीय संतुलन के बीच सामंजस्य स्थापित करना समय की प्रमुख आवश्यकता है।

उद्देश्य-

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शहरीकरण के जैव विविधता पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना तथा सतत एवं संतुलित विकास की आवश्यकता को स्पष्ट करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है—

1. शहरीकरण एवं जैव विविधता के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।
2. नगरीय विकास के सिद्धांतों के संदर्भ में जैव विविधता पर प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. शहरीकरण से उत्पन्न पर्यावरणीय चुनौतियों की पहचान करना।
4. जैव विविधता संरक्षण हेतु उपयुक्त उपायों का सुझाव देना।

अध्ययन का विश्लेषण-

नगरीय विकास और जैव विविधता का गहरा संबंध है। अनियोजित शहरीकरण प्राकृतिक संसाधनों एवं पारिस्थितिक तंत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इसलिए शहरीकरण और पर्यावरणीय संतुलन के मध्य सामंजस्य स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है।

नगरीय विकास सिद्धांत एवं जैव विविधता-

1.* संकेंद्रीय वृत्त सिद्धांत (*Concentric Zone Theory)

इस सिद्धांत का प्रतिपादन *1925* में अर्नेस्ट बर्गेस द्वारा किया गया था। इसके अनुसार नगर का विकास केंद्र से बाहर की ओर संकेंद्रीय वृत्तों के रूप में होता है। नगर की वृद्धि के साथ-साथ ये वृत्त बाहरी क्षेत्रों की ओर विस्तारित होते जाते हैं। छोटे नगरों में व्यापारिक एवं प्रशासनिक गतिविधियाँ एक ही क्षेत्र में केंद्रित रहती हैं, जबकि बड़े नगरों में विभिन्न कार्यों हेतु पृथक क्षेत्र विकसित हो जाते हैं। इस प्रकार का विस्तार प्राकृतिक आवासों एवं जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

2.* सेक्टर सिद्धांत (*Sector Theory)

इस सिद्धांत का प्रतिपादन *1939* में होमर होयट द्वारा किया गया था। इसके अनुसार नगर का विकास मुख्यतः यातायात मार्गों के सहारे विभिन्न दिशाओं में होता है। सड़कों एवं परिवहन नेटवर्क के विस्तार के कारण वन क्षेत्रों एवं प्राकृतिक आवासों का क्षरण होता है, जिससे जैव विविधता प्रभावित होती है।

3.* बहु-केंद्रीय सिद्धांत (*Multiple Nuclei Theory)

इस सिद्धांत को *1945* में हैरिस एवं उलमैन द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसके अनुसार नगर का विकास एक केंद्र के बजाय अनेक केंद्रों के चारों ओर होता है। आवासीय, औद्योगिक, व्यापारिक तथा परिवहन केंद्र अलग-अलग क्षेत्रों में विकसित होते हैं। इसके परिणामस्वरूप भूमि उपयोग में व्यापक परिवर्तन होते हैं, जिससे प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र एवं जैव विविधता प्रभावित होती है।

शहरीकरण का जैव विविधता पर प्रभाव-

1. **प्राकृतिक आवासों का विनाश** – शहरी विस्तार के कारण वन, घासभूमि एवं आर्द्रभूमि जैसे प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाते हैं।
2. **वनस्पति एवं पुष्पीय प्रजातियों में कमी** –भूमि उपयोग परिवर्तन के कारण स्थानीय वनस्पति प्रजातियाँ समाप्त होने लगती हैं।
3. **वन्यजीवों पर प्रतिकूल प्रभाव** – आवासों के विखंडन के कारण वन्यजीवों के भोजन, प्रजनन एवं आवागमन में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

4. **वायु, जल एवं ध्वनि प्रदूषण में वृद्धि** –औद्योगिक एवं नगरीय गतिविधियों से प्रदूषण बढ़ता है, जिससे जीव-जंतुओं एवं वनस्पतियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

5. **तापमान में वृद्धि (*Urban Heat Island Effect)*** –कंक्रीट संरचनाओं एवं हरित क्षेत्रों की कमी के कारण शहरी क्षेत्रों का तापमान बढ़ जाता है।

6. **परागण प्रक्रिया पर प्रभाव** – मधुमक्खियों, तितलियों एवं अन्य परागणकर्ताओं की संख्या में कमी आने से परागण प्रक्रिया प्रभावित होती है।

7. **आक्रामक प्रजातियों का प्रसार** – शहरी क्षेत्रों में बाहरी प्रजातियों के प्रसार से स्थानीय जैव विविधता को खतरा उत्पन्न होता है।

सतत विकास एवं जैव विविधता संरक्षण हेतु उपाय-

1. पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देना।
2. शहरी वनों एवं हरित पट्टियों का विकास करना।
3. पर्यावरण-अनुकूल भूमि उपयोग योजना अपनाना।
4. जलाशयों एवं प्राकृतिक आवासों का संरक्षण करना।
5. विलुप्तप्राय वनस्पति एवं जीव-जंतुओं की प्रजातियों का संरक्षण करना।
6. हरित अवसंरचना एवं सतत शहरी नियोजन को प्रोत्साहित करना।
7. प्रदूषण नियंत्रण के प्रभावी उपाय लागू करना।

निष्कर्ष-

शहरीकरण देश की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है, किंतु अनियोजित एवं अनियंत्रित शहरीकरण जैव विविधता के लिए गंभीर चुनौती बन सकता है। इसलिए नगरीय विकास के विभिन्न सिद्धांतों, सतत विकास की अवधारणाओं तथा जैव विविधता संरक्षण के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।

यदि शहरी नियोजन में पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी जाए, तो एक ओर शहरों का समुचित विकास संभव होगा और दूसरी ओर प्राकृतिक संसाधनों तथा जैव विविधता का संरक्षण भी सुनिश्चित किया जा सकेगा। इस प्रकार सतत शहरीकरण ही भविष्य के पर्यावरणीय संतुलन एवं मानव कल्याण का आधार बन सकता है।

संदर्भ (*References)*-

1. बंसल, एस. सी. (*2018)* - मानव भूगोल। नई दिल्ली: मीनाक्षी प्रकाशन।
2. सिंह, जगदीश (*2019)* - नगरीय भूगोल। प्रयागराज: राधा पब्लिकेशन्स।
3. मिश्रा, आर. पी. (*2017)* - पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी। नई दिल्ली: शारदा पुस्तक भवन।
4. शर्मा, पी. डी. (*2020)* - पर्यावरण विज्ञान। मेरठ: रस्तोगी पब्लिकेशन्स।